इकाई 4 छत्तीसगढ़ी भाषा व साहित्य

शिक्षा और हमारे जीवन से भाषा का गहरा संबंध है। छत्तीसगढ़ की मुख्य भाषा छत्तीसगढ़ी है। इसे राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। राज्य में आयोजित होने वाली प्रतियोगी परीक्षाओं में छत्तीसगढ़ी भाषा और संस्कृति से संबंधित प्रश्न भी पूछे जाते हैं। छत्तीसगढ़ी भाषा का अपना समृद्ध साहित्य है, जिसमें यहाँ की संस्कृति व लोकजीवन की झलक मिलती है। छत्तीसगढ़ी के लोकसाहित्य और आधुनिक साहित्य की खूबसूरती से परिचय हो सके, आप छत्तीसगढ़ी साहित्य की खूबसूरती को महसूस कर सकें, पढ़कर भाषा की समझ विकसित कर सकें और पढ़ी हुई सामग्रियों में अपने विचारों, अनुभवों का समावेश कर अभिव्यक्त कर सकें, इन्हीं उद्देश्यों से इकाई में छत्तीसगढ़ी भाषा में लिखे ये पाठ शामिल किए गए हैं–

लोकसाहित्य के अंतर्गत दो लोककथाएँ **साँच ल आँच का** एवं **हिरन अउ कोलिहा** दी गई हैं। पहली लोककथा जीवन में परिश्रम, साहस और सूझबूझ के महत्त्व को व्यक्त करती है। दूसरी लोककथा पंचतंत्र की कथाओं की तरह तात्कालिक बुद्धि और चतुराई के उदाहरण प्रस्तुत करती है।

वर्तमान समय में छत्तीसगढ़ी में काफी रचनाएँ लिखी जा रही हैं। यहाँ दी गई **सुरुज टघलत हे...** ऐसी ही एक कविता है। इस कविता में ग्रीष्मऋतु के स्वरूप और मानव जीवन पर उसके प्रभाव को सुंदर ढंग से चित्रित किया गया है। गज़ल छत्तीसगढ़ी साहित्य के लिए एक नई विधा है। इस विधा से बच्चों को परिचित कराने के लिए एक छत्तीसगढ़ी गज़ल **नँदिया–नरवा मा तँउरत हे** को इस इकाई में शामिल किया गया है। इस गज़ल में छत्तीसगढ़ की समरसता, संघर्षशीलता एवं ऐतिहासिकता का चित्रण है।